ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-9* December-2020
Anthology : The Research

लद्दाख का प्रकृतिक सौन्दर्य

Natural Beauty of Ladakh

Paper Submission: 15/12/2020, Date of Acceptance: 26/12/2020, Date of Publication: 27/12/2020

सुमन कुमारी मीना
शोधार्थी
हिन्दी विभाग,
महर्षि दयानन्द सरस्वती
विश्वविद्यालय, अजमेर,
राजस्थान, भारत

रेणु वर्मा
सह आचार्य
हिन्दी विभाग,
राजकीय स्नाकोत्तर
महाविधालय, टोक, भारत

सारांश

सौन्दर्य हिन्दी भाषा का एक ऐसा अनूठा शब्द है जिसको सुनकर व्यक्ति के दिमाग मे सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है । सौन्दर्य युक्त वस्तु, व्यक्ति, स्थान, शहर आदि को देखने पर मन मे सुविचार प्रस्फुटित होते है एवं मानव मस्तिष्क शांति का अनुभव करता है । वस्तुतः सौन्दर्य दो प्रकार के होते है । पहला सौन्दर्य कृत्रिम या बनावटी सौन्दर्य, जिसकी उत्पत्ति बाजारवाद कि देन है। दूसरा है, प्रकृतिक सौन्दर्य जो कि प्रकृति द्वारा स्वंय ही उत्पादित होता है । प्रकृतिक सौन्दर्य प्रकृति का श्रेष्ठ रूप है जो कि मानव की कुंठित एवं विस्तारवादी सोच से बचा हुआ है। प्रकृतिक सौन्दर्य के विभिन्न रूप है जो हमे पहाड़, नदी, झरने, बाग–बगीचे, जंगली जानवर, विभिन्न प्रकार के विचित्र पशु–पक्षियों, गुफाओ जल–प्रपातो ,झीलों आदि के रूप मे दिखाई देते है ।

Beauty is such a unique word in the Hindi language that on hearing that there is a positive energy flow in the mind of the person, when looking at a beautiful object, person, place, city, etc., there are thoughts in the mind and the human mind experiences peace In fact, there are two types of beauty. First beauty is artificial or artificial beauty, the origin of which is the product of marketism, second is natural beauty which is produced by nature itself. Natural beauty is the best form of nature which is frustrated and expansionary of human Hass is left from the thinking, there are various forms of natural beauty which we see in the form of mountains, rivers, waterfalls, orchards, wild animals, different kinds of strange animals, birds, caves, waterfalls, lakes etc.

मुख्य शब्द : लद्दाख ,पशु–पक्षियों, गुफाओ जल–प्रपातो ,झीलों, सौंदर्य ।
Ladakh, Animals and Birds, Caves, Waterfalls, Lakes, Beauty.

प्रस्तावना

प्रकृति के सौंदर्य का मानवीकरण छायावादी कवियाँ कि प्रमुख विशेषता रही है | उन्होंने प्रकृति पर मानवीय चेतना का आरोप करते हुए उसे मानव कि तरह हसते, रोते एवं विभिन्न क्रिया–कलाप करते हुए दिखाया है | गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टेगोर ने भी अपने साहित्य मे प्रकृति का चित्रण करते हुए लिखा है कि एक "अंकुर को देखकर जो प्रसन्नता का अनुभव होता है, उसकी तुलना और किसी खुशी से नहीं की जा सकती" मानव जीवन मे व्याप्त विषमताओ के अनुरूप प्रकृति मे भी विषमता विधमान है जैसे– आकाश असीम सुखों का उपयोग करता हुआ प्रसन्नता पूर्वक रात को अपने नक्षत्र–समाज के साथ क्रीडा करता है, वही पृथ्वी को हमेशा दुख वाहिनी समझा जाता है |

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र का मूल उद्देश्य प्रकृति के महत्व को समझते हुए मनुष्य का इस ओर ध्यान आकर्षित करना है | यात्राओ मे प्राकृतिक स्थलों को और अधिक प्रासंगिक बनाने के लिए उनका सौंदर्यीकरण कर उनका प्रचार–प्रसार करना आज के सभ्य समाज का मुख्य कर्तव्य है | मानव को आत्म शांति एवं संतुष्टि पाने के लिए आधुनिकता की चकाचौंध से निकल कर प्रकृति की शरण मे जाना ही होगा |

विषयवस्तु

प्रकृति के सौन्दर्य रूप और विषमताओ को लेखनी से कागज पर चित्रित करने वालों मे सुमित्रानन्द पंत, कवि देव, महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, अज्ञेय, नागार्जुन, गिरिजा कुमार माथुर, अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध आदि कवियों का नाम मुख्य रूप से लिया जाता है |

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानन्द पंत ने अपनी कविताओ मे मूल तत्व प्रकृति को ही सर्वोपरि माना है । इन्होंने अपनी कविता 'घोसला' मे धरती को माँ के समान मानकर लिखा है कि ———१) "यहाँ मिली माँ के आँचल कि छाँव, शाश्वत स्नेह ,निश्छल प्यार
देवकी नहीं मिली तो क्या ? प्रकृति रही उनके साथ" (१)

छायावादी कवियों ने अपनी रचनाओ मे प्रकृति के तत्व जो कि जन– जीवन के लिए आवश्यक है (वायु, जल, मृदा, पादप, आदि) को भावनात्मक रूप से जोड़कर प्रस्तुत किया है। इन्होंने कल्पनाओ के आधार पर मानसिक क्रियाओ का प्रकृति के साथ सह–सबंध स्थापित करने की कोशिश की है।

आचार्य नन्ददुलारे बाजपेई ने अपनी कृति 'हिन्दी साहित्य २० वी शताब्दी' मे लिखा है कि–
(२) " कल्पना ही पंतजी की कविता की विशेषता उसके आकर्षण का रहस्य है, कल्पना पंतजी की कविता का मेरुदंड है"|(२)

प्रकृति प्रेमी कवियाँ का मूल गुण कल्पना ही है | क्योंकि इसके बिना प्रकृति को मानव जीवन से जोड़ पाना कठिन है | मनुष्य के संवेदनशील गुणों को प्रकृति में दृश्यमान करने का एकमात्र माध्यम कल्पना ही है |

श्री विश्वभरनाथ मानव ने अपनी कृति 'सुमित्रानन्द पंत' मे पंत जी कि प्रकृति प्रेमी प्रवृत्ति का वर्णन करते हुए लिखा है कि–
(३) "पंतजी ने प्रकृति कि एक एक वस्तु मे चेतना पहचानी हैस प्रकृति का उन्होंने शरीर ही नहीं देखा मन भी देखा है, ओर देखी है उस मन कि भावना भी सरिता, सुमन, नक्षत्र, बादल आदि के संपर्क मे वे आते है तो उनके रूप निहारने कि अपेक्षा उन्हे ह्रदय कि बात सुनना अधिक भाता है" |(३)

प्रकृति पर आधुनिकता के कठुराघात को उजागर करते हुए जयशंकर प्रसाद ने अपनी कालजयी रचना 'कामायनी' मे लिखा है कि––
(४) "प्राकृत शक्ति तुमने यंत्रो से सबकी छीनी
शोषण कर जीवनी बना दी जर्जर झीनी" (४)

आचार्य राम चंद्र शुक्ल ने अपनी कृति 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' मे कामायनी पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि–
(५) "उन्होने नर जीवन के विकास मे भिन्न –भिन्न भावात्मक व्रत्तियों का योग ओर संघर्ष बड़ी प्रगल्य ओर रमणीय कल्पना द्वारा चित्रित करके मानवता का रसात्मक इतिहास प्रस्तुत किया है"(५)

महादेवी वर्मा ने भी मानवीय वेदना, भावनात्मक चित्रण आदि के लिए प्रकृति का सहारा लिया है। इन्होने प्रेमी के विरह ओर मिलन के अवसर पर प्रक्रति को साक्षी माना है ।
जैसे – "आँसू बन बन तारक आते , सुमन ह्रदय मे सेज बीछाते । "

महादेवी ने प्रकृति की मार्मिक व्यंजना करते हुए लिखा है कि–
"कोकिल गान ऐसा राग ! मधु की चिर प्रिया यह राग,
उठता मचल सिंधु अतीत लेकर सुप्त सुधि का ज्वर ।

उक्त विवरण से यह साफ हो जाता है कि छायावादी कवियों ने सम्पूर्ण मानव जीवन (जन्म से मृत्यु तक) को प्रकृति का सहचर बताया है । प्रकृति मानव शांति एवं विकास के लिए आवश्यक है । मानव को मानवीय संतुलन के लिए प्रकृति के नियमो का अनुसरण करना आवश्यक है ।

प्रकृति प्रेमी कवियों की भावनाओ का अनुसरण करते हुए ही लेखिका 'कृष्णा सोबती' ने अपनी कृति "बुद्ध का कमण्डल लद्दाख" मे लददाख की प्राकृतिक संपदाओ का व्याख्यान करते हुए इसे मानव जीवन से जोड़ा है। प्राकृतिक सौंदर्य पर शोध पत्र लिखने के पीछे एक उद्देश्य यह भी है कि हमे प्राकृतिक नियमो का पालन करना चाहिए, क्योकि आज के भटके हुये मानव समाज को प्रकृति ही सही रास्ता दिखा सकती है। यह सार्वभौमिक सत्य है कि प्रकृति सदा मनुष्य की सहायक रही है, जबकि मनुष्य इसका दुश्मन बनता जा रहा है ।

प्रसिद्ध लेखिका कृष्णा सोबती द्वारा लिखित यात्रावृतांत 'बुध्द का कमंडल लद्दाख' में लद्दाख की प्राकृतिक छटाओं का बखूबी वर्णन किया है । लद्दाख भारतवर्ष का वह अनुपम हिस्सा है जिस पर प्रकृति कुछ अधिक महरबान नजर आती है। लद्दाख में पर्वत चोटी, नदी, झील, बर्फ, दोपहर आदि का संगम एक साथ दिखाई देता है। लद्दाख के प्राकृतिक सौंदर्य की बहुलता के कारण ही पड़ोसी देश चीन की कुदृष्टि हमेशा इसकी तरफ रहती है।

लद्दाख क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा जिला है । जबकि जनसंख्या की दृष्टि से सबसे छोटा ।

हिमालय की ऊंचाइयों में स्थित लद्दाख पर्वतीय स्थानों से एकदम अलग है । ऊपर निर्मल नीला आकाश सफेद बादलों से सजा और नीचे पीले रेतीले, मटमैला, ऊंचे बर्फीले शिखरों को मोहित करती ग्रे काली और दालचीनी रंग की चट्टाने कुदरत के कठोर वैभव का अनूठा लैंडस्केप ।

लेखिका ने इस किताब के माध्यम से लद्दाख के प्राकृतिक सौंदर्य की उन अनुभूतियों को अंकित किया है, जिन्हें विश्व के इसी भू–भाग से अनुभव और अर्जित किया जा सकता है ।

लद्दाख को कई नामों से जाना जाता है जिनमें से एक नाम 'बुध्द का कमंडल' भी है। आज से हजारों वर्ष पूर्व बुध्द अनुयायियों ने अपने धर्म का प्रचार–प्रसार करते हुए इस दुर्गम स्थान में अनेक गोम्पा (बौध्द विहार) बनवाए जिनको देखने पर ऐसा अनुभव होता है कि इनको प्रकृति ने आत्मसात कर लिया है। इन गुफाओं में रहने वाले अध्यात्मिक लोग भी प्राय प्रकृति प्रेमी ही हैं।

अपनी लद्दाख यात्रा का वर्णन करते हुए लेखिका लिखती है कि– हवाई अड्डे से बाहर निकल कर इधर–उधर देखने पर ऐसा अनुभव होता है कि–
(६)"यह लैंडस्केप दूसरी दुनिया का है । दूर–दूर तक चट्टाने ही चट्टाने, एक दूसरे से लगी पहाड़ों की श्रृंखलाएं बर्फीले शिखर । नीले आकाश का चंदोवा जैसे यह रहा , इतना नजदीक कि जब चाहे छूले"(६)

यहां दूर–दूर तक फैला चट्टानों के विपुल भंडार और कठोर शुष्क दृश्यांवलियों के विस्तार ही विस्तार, यहां की प्रकृति ने कम से कम रंगों का चुनाव किया है ।

लेखिका ने लद्दाख में सूर्योदय का वर्णन करते हुए लिखा है कि, घना कोहरा ऐसा कि हाथ को हाथ न दिखे लेकिन देखते–देखते कोहरा गायब हो गया और माउंट एवरेस्ट के पीछे झांकता, उघड़ता आलोक और पीली सुनहरी किरणों के बीच सूर्य भगवान ने आकाश में दस्तक दी। पर निथरे आकाश पर अभी भी तारों का जमावड़ा है। अगले ही पल लद्दाख का निथरा निर्मल आकाश उजले प्रकाश से सीच दिया गया।

लेखिका जब लेह के संकर गोम्पा में दर्शन को जाती है तो वहां की चमकीली धूप को देखकर महसूस करती है कि सचमुच यह ही इस नगर को चमकदार बनाती है ।

(७) "लद्दाख की प्रकृति का अंकन आख्यान कुछ ऐसे की विभिन्न रंग रूप तुलनात्मक शैली में अभिव्यक्त हुए हैं । ऊंची बर्फीली चोटियां हैं तो मंझोली पहाड़ियां भी, आकाश को छूते शिखर है तो आराम से पसरी चट्टाने पर भी, हिमशिखर जमे हैं मजबूती से मगर पानी की जलधाराएं बूंदे बूंदे रिसती हैं, ठण्ड़क पिघलती है धूप में और धूप उसे सोख लेती है, घाटी भर में सन्नाटे पड़े हैं मगर रात में तूफानी हवाओं का जबर शोर होता है, प्रकृति के इस भौगोलिक आकाश के विस्तार की नीलाहटे है तो हिमालय का बर्फीला ठाठ भी"। (७)

सूर्यास्त के समय लेह के निथरे निर्मल आकाश पर सूरज का सुनहरा आलोक है बादलों के छोटे–बड़े गुच्छे कहीं पीले कहीं ग्रे और कहीं हल्के गुलाबी –जामुनी कुदरत के कठोर वैभव का अनूठा लैंडस्केप, देर तक सूर्यास्त का प्रकाश मध्दम गति से अंधेरों में बदलने लगा तो बाजार में चलते हुए कुछ ऐसे लगा कि लोग आकाश की वीथि में चल रहे है ।

(८) लद्दाख का दिन इतना गर्म की प्यास से गला सूखने लगे और रात इतनी सर्द की गर्माहट को चीर दे। चट्टानें खूब तपती हैं मगर छाँह में ठंडक रहती है। अगर हमें आधी छाँह और आधी धूप में खड़े हो तो हमारे बदन का एक हिस्सा सर्द और दूसरा गर्म रहेगा। (८)

यहां की पथरीली सूनी घाटियों में तेज हवाओं का नर्तन जोर–जोर से होता है। हिमालय के आर पार से उठती यह हवाऐ प्रकृति का ही चमत्कार है। पानी की कमी और रेतीली जमीन के कारण लद्दाख में कुदरती जंगल का उगना मुश्किल है । इसके बावजूद हैरानी की बात यह है कि कौवे, काकोल, कपोत, नीलकंठ, चिड़िया, गरुड़, शिकरा, बाज और चील जैसे पक्षी देखने को मिलते हैं| लेखिका ने यहां पाये जाने वाले जानवरों का भी उल्लेख करते हुए बताया है कि यहां मुख्य रूप से लद्दाखी घोड़े, याक, हिरन, बकरियां, चीते, खच्चर, इत्यादि पाए जाते है जो कि अपनी अपनी विशेषताओं के कारण प्रसिध्द है।

लद्दाख के फियांग में चट्टानों के विपरीत पहाड़ बर्फ का चमचमाता धवल श्वेत ग्लेशियर और हरित क्यारियों का अद्‌भुत संगम सिर्फ लद्दाख में ही मिलता है।

वहां की प्रकृति के सौंदर्यतम रूप का वर्णन करते हुए लेखिका लिखती है कि जब वह लामायूरू जाते वक्त रास्ते में जंसकार नदी के विहंगम दृश्य को देखती है तो लगता है मानो

(९) "हम आज की दुनिया से अलग–अलग हजारों–हजारों साल पुराने युगों के एकांत में पहुंच गए है। गहरे ताम्बई रंग की चट्टान पर खड़े हो, नीचे देखा कि नीले पानी की धाराऐ हैं और इन पर तैरती धुपीली किरणे। "(९)

जंसकार नदी के ऊपर चलते हुए कोई आहट नहीं, आवाज नहीं, ट्रैफिक नहीं, कोई पक्षी नही, कोई सैलानी नहीं, चारों ओर जमी है रंग बिरंगी चट्टाने ही चट्टाने, यह है लद्दाख और उसकी प्राकृतिक सौंदर्यता। सीमान्तो के इस भूखंड पर खड़ी होकर नीचे देखती हु और हजारों साल पीछे जा पहुंचती हूँ, हजारों हजार वर्षो पहले की पर्वत श्रेणियों और उनके बीच में पहाड़ों से लगी बह रही जंस्कार नीलाहटी छटा देती है । ऊपर तिर रही है धूप की रुपहली लहरें और आस पास सब स्तब्ध हैं, मौन हैं, मीलो ऊपर खड़े होकर नदी की कल–कल छल–छल की आवाज तो नहीं सुनी जा सकती लेकिन किसी प्राचीन अन्तर्मन से अपने होने का अनुभव किया जा सकता है ।

लद्दाख के बौध्द विहार भी इसकी प्राकृतिक सौंदर्यता को बढ़ाने में अहम योगदान रखते है। इन विहारों में अपूर्व भित्तिचित्र, दुर्लभ मूर्तियों और हस्तलिखित अनमोल ग्रंथ बौद्ध धर्म की सांस्कृतिक धरोहर के रूप में सुरक्षित है। इन बिहारों में प्रवेश करते ही यहां के हल्के उजालों से अन्तर्मन आत्मिक हो उठते हैं और हम कुछ ऐसा महसूस करते हैं कि जो भी देख रहे हैं मात्र दर्शक के रूप में ही नहीं उसमें प्रवेश कर उस समायातीत अनुभूति का अभास होने लगता है जो कि विहार के स्थापत्य में सुरक्षित है।

लद्दाख के ससपोल में अच्छी खासी हरियाली व समतल धरती पर विचरण करते हुए ऐसा प्रतीत होता की है कि हम आकाश और पृथ्वी के बीच फैले एकांत में चहलकदमी कर रहे है। सिंधु दरिया के बहते हुए विस्तार एवं उसके बीच स्थित दालचीनी रंग की चट्टानों को देखकर बार–बार नदी में नहाने का मन करता है।

अन्त में लेखिका बौद्ध प्रवचनों की पंक्तियों को याद करते हुए लिखती है कि –

(१०) "जो भी देखो, ऐसा देखो जैसे जीवन में पहली बार देख रही हो–
फिर ऐसे देखो, जैसे जीवन में अंतिम बार देख रहे हो''(१०)

लेखिका लद्दाख की प्राकृतिक सौन्दर्यता से अभिभूत हो कहती है कि–

(११) "हम हरियाली बनाये रखें हम नदियां झरनों और ताल तलैया को स्वच्छ रखें। उनके जल की निर्मलता बनाए रखें । जल हमारी धरती को खेतों की हरियाली को हमारे प्राणों को जीवित रखने वाला स्पंदन है। अपार शक्ति का पुंज है। हमें मिला है पर्वतराज हिमालय की कृ पा से । " (११) और इसी हिमशिखर की गोद में बसा है प्यारा सा लद्दाख।

कृष्णा सोबती के अलावा और भी यात्राकरों ने लद्दाख के प्राकृतिक सौंदर्य को अपने–अपने ढंग से यात्रावृत्तों में अंकित किया है।

महान यात्राकार पंडित राहुल सांकृत्यायन ने भी लद्दाख के संपूर्ण प्राकृतिक सौंदर्य को एक साथ बयान करते हुए अपनी कृति 'मेरी लद्दाख यात्रा' में लिखा है| कि–

(१२) "चारों तरफ घेरे हुए पहाड़ जिनके पीछे की ओर हिमाच्छादित शिखर वाले पर्वत है बीच–बीच में जगह–जगह लंबे–लंबे जलाशय सूर्य की गति से कुशिल गति से बहती झेलम दूर तक, शहर के बाहर भी सेव, बादाम आदि के बागों में बने हुए छोटे–छोटे सुंदर बंगले, हरी घासों से ढके लंबे–लंबे क्रीडा क्षेत्र, सुंदर चिनार के वृक्षों की शीतल छाया के अंदर हरी घास के मखमली फर्शों वाली सुभूमिया देखने में बड़ी सुंदर मालूम होती है। "(१२)

लद्दाख एक दुर्गम पर्वतीय क्षेत्र है तथा ऊंचाइयों की अधिकता के कारण ऑक्सीजन की कमी हो जाती है ऐसे विपरीत परिस्थितियों में भी बहुत समय पहले से यात्राकारों ने इस स्थान का भ्रमण किया है इसकी मुख्य वजह वहां की प्राकृतिक छटा रही है ।

डॉक्टर जय नारायण कौशिक ने अपनी कृति 'राइन नदी से सिंधु तक' में लद्दाख के पर्वतीय स्वरूप एवं खासतौर से वहां की सिंधु नदी का सुंदर वर्णन किया है। कोशिक जी ने हवाई यान के लैंडिंग करने के दौरान देखे गए पर्वतीय सौंदर्य एवं बादलों की अठखेलियां को कागज पर उकेरते हुए लिखा है कि–

(१३) "पर्वतों को हम मैदानी क्षेत्र के लोगों की नजर ना लग जाए अतः इन पर मेघ मंडल उमड़ने घुमड़ने लगे इन्होंने सौंदर्य को पूरी तरह अदृश्य कर दिया है। पर्वतमाला ना सही हम दोनों मेघमंडल के स्वरूप का सौंदर्य लूटने लगे। कई मेघ तो दो सौ तीन सौ मीटर की ऊंचाई वाले थे इनके श्याम वर्ण से लगता था। जैसे इन्होंने आकाश में स्तूप खड़े कर दिए हैं। थोड़ी देर में इन स्तूप श्वेत वर्ण वाले मेघ विराजमान हुए लगता है। की श्याम स्तम्भो पर श्वेत छत आच्छादित हो गई"(१३)

आगे कोशिक जी सिंधु नदी के दृश्य को चित्रित करते हुए लिखते हैं कि–

(१४) "वायु यान ज्यों–ज्यों लेह हवाई अड्डे को स्पर्श करने धीरे–धीरे उतर रहा था, सिंधु नदी की क्षीण धारा सहज ही दिखाई देने लगी थी लेह हवाई अड्डा नदी धारा से बहुत दूर नहीं है।नदी के दोनों ओर की हरियाली हरे–भरे श्वेत तथा लघुकाय वृक्षों के झुंड क्षेत्र की महत्ता की पुकार कर रहे थे"(१४)

आगे कोशिक जी ने सिंधु नदी की तुलना लद्दाख के अधिकाधिक बौध्द मतावलम्बियों से करते हुए लिखा है कि–

(१५) "यहां सिंधु नदी बौद्ध मत अनुयायियों के अनुकूल शांत स्वभाव और विनीत भाव से बहती है जैसे बौध्द मतावलंबी महात्मा बुद्ध के आदेश 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' का पालन कर धनसंग्रह नहीं करते वैसे ही सिंधु नदी असंग्राही गुण धारण करती है। "(१५)

अंतः हम कह सकते हैं कि कोशिक जी ने पर्वतमाला, नदी, मेघ मे सहसंबंध स्थापित करने की कोशिश की है जो कि एक प्राकृतिक व्यवस्था के अनुकूल ही है।

ओम प्रकाश चतुर्वेदी पराग ने भी अपने यात्रा वृतांत 'दर्रो का देश लद्दाख' में लद्दाख के प्रत्येक क्षेत्र का विस्तृत वर्णन किया है।अपने शीर्षक को परिभाषित करते हुए ओम प्रकाश चतुर्वेदी जी ने लिखा है कि–

(१६) " 'ला' का अर्थ है दर्रा तथा दाम्ब का अर्थ भूमि अतः लद्दाख शब्द का अर्थ हुआ दर्रो की भूमि"। (१६)

लद्दाख को अनेक नामों की संज्ञा दी गई है जैसे 'ठंडा रेगिस्तान', 'चमत्कारों की भूमि', 'बुध्द का कमंडल', दर्रे की भूमि इत्यादि।

चतुर्वेदी जी ने यहां के प्राकृतिक सौंदर्य को अपने शब्दों में इस तरह कहा है।

(१७) "भारत के सर्वाधिक ऊंचे पर्वतों पर बसा तथा प्रकृति का लाडला लद्दाख हिमालय के पार स्थित होने और वर्षा की कमी के कारण वहां की भूमि शस्य श्यामला तो नहीं, तथापि एक ऐसे अनोखे नैसर्गिक सौंदर्य से मालामाल है जो पर्यटकों के लिए स्वर्ग का मनोरंजन दृश्य उपस्थित करता है। मीलों लंबी चौड़ी झीलों नाना रंगों की पर्वत श्रेणियों विशाल ठंडे रेगिस्तान मुनलैंड, धूप और छाया के अद्भुत नजारे प्रस्तुत करते भूखंडों विश्व की सर्वाधिक ऊंचाई पर बनी पक्की सड़कों 'ग्लेशियरों' पर बने पुलों और निर्जलता के शांत साम्राज्यों के कारण यहां एक विशिष्ट आकर्षण है। " (१७)

निष्कर्ष

उक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि 'लद्दाख एक अद्भुत क्षेत्र है जिसको चमत्कारों की भूमि कहने पर कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । लद्दाख में पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं । लद्दाख में प्रकृति के सारे अवयव दृश्यमान होते हैं। पहाड़ी क्षेत्रों का भ्रमण करने की मंशा रखने वालों को एक बार लद्दाख का रुख जरूर करना चाहिए। ऐसा अपूर्व और अलौकिक आनंद शायद ही किसी अन्य पर्वतीय प्रदेश का पर्यटन प्रदान कर सके ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *घोंसला (कविता) –सुमित्रानन्द पंत*
2. *आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी –हिन्दी साहित्य २०वीं शताब्दी–पृ०–१४*
3. *श्री विश्वभरनाथ मानव – सुमित्रानन्द पंत–पृ०–१५८*
4. *जयशंकर प्रसाद – कामायनी – पृ० –२२६*
5. *आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास – पृ० –६७७*
6. *कृष्णा सोबती – बुध्द का कमंडल लददाख –पृ०–१६*
7. *कृष्णा सोबती – बुध्द का कमंडल लददाख –पृ०–२६–३१*
8. *कृष्णा सोबती – बुध्द का कमंडल लददाख –पृ०–४५*
9. *कृष्णा सोबती – बुध्द का कमंडल लददाख –पृ०–८२*
10. *कृष्णा सोबती – बुध्द का कमंडल लददाख –पृ०–१७०*
11. *कृष्णा सोबती – बुध्द का कमंडल लददाख –पृ०–१७३*
12. *राहुल सांकृत्यायन –मेरी लददाख यात्रा– पृ० –५३*

13. डॉ जयनारायण कौशिक –राइन नदी से सिंधु तक–पृ० –१६२
14. डॉ जयनारायण कौशिक –राइन नदी से सिंधु तक–पृ० –१६३
15. डॉ जयनारायण कौशिक –राइन नदी से सिंधु तक–पृ० –१६५
16. ओम प्रकाश चतुर्वेदी पराग –दर्रो का देश लददाख–पृ० –१
17. ओम प्रकाश चतुर्वेदी पराग –दर्रो का देश लददाख–पृ० –१८